महामृत्युञ्जयमन्त्र की संक्षिप्त जपविधि

भगवान् मृत्युञ्जय के जप-ध्यान से मार्कण्डेयजी तथा राजा श्वेत आदि के कालभयनिवारण की कथाएँ शिवपुराण, स्कन्दपुराण-काशीखण्ड तथा पद्मपुराण-उत्तरखण्ड-माघमाहात्म्य आदि में आती हैं। इन कथाओं की चर्चा इस पुस्तक में यथास्थान की गयी है।

मन्त्रशास्त्र में वेदोक्त **'त्र्यम्बकं यजामहे०'** (ऋक् 7/59/12 तथा यजु. 3/60) को ही मृत्युञ्जय नाम प्राप्त है। पुराणों में, मन्त्रमहोदधि, मन्त्रमहार्णव, शारदातिलक, विविध निबन्ध-ग्रन्थों में तथा मृत्युञ्जय-तन्त्र, मृत्युञ्जय-पंचांग एवं मृत्युञ्जयकल्प आदि में इस मन्त्र का भाष्य, विधान, पटल, पद्धति, स्तोत्र आदि सब कुछ मिलते हैं। शिवपुराण (रुद्रसंहिता-सतीखण्ड 38/21-34) में इसका विस्तृत भाष्य है। वहाँ इसी को शुक्राचार्य की 'मृतसंजीवनीविद्या' कहा गया है[1] तथा स्वयं शुक्राचार्य ने ही इसका दधीचि को उपदेश किया है। 'विष्णुधर्मोत्तरपुराण' आदि में इसके हवनादि के भेद से अनेक अर्थ-कामसाधक दूसरे काम्य प्रयोग भी बतलाये गये हैं। यथा—

त्र्यम्बकं यजामहेति होमः सर्वार्थसाधकः।।
धत्तूरपुष्पं सघृतं तथा हुत्वा चतुष्पथे।
शून्ये शिवालये वापि शिवात् कामानवाप्नुयात्।।
हुत्वा च गुग्गुलं राम स्वयं पश्यति शंकरम्।

(विष्णुधर्मोत्तर पु. 2/125/23-25)

ऋग्विधान आदि में भी ऐसा ही बतलाया गया है। यद्यपि शारदातिलक एवं अन्य तन्त्रों तथा मन्त्रमहार्णव आदि में एक साथ ही त्र्यक्षर, पंचाक्षर आदि कई मृत्युंजयमन्त्र बतलाये गये हैं तथापि यहाँ सर्वाधिक प्रचलित 'त्र्यम्बक-मन्त्र' के ही जप की संक्षिप्त विधि दी जा रही है।

ॐ हौं ॐ जूँ सः। भूर्भुवः स्वः।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। भूर्भुवः स्वरों जूँ सः हौं ॐ।

—यह सम्पुटयुक्त महामृत्युञ्जय मन्त्र[2] है। इसमें से केवल **'हौं जूँ सः'**[3] - इस बीज मन्त्र को लघु मृत्युञ्जय कहा जाता है।

लघु मृत्युञ्जय का जप सभी कर सकते हैं और संकल्प-पूर्वक करने पर यह भी बहुत से कष्टों का निवारण कर देता है। शिव-मन्दिर में भगवान् शिव के समीप बैठकर इसका नियमपर्वूक

---

1. **मृतसंजीवनीमन्त्रो मम सर्वोत्तमः स्मृतः।** (शि. पु. रुद्रसं., सती. 38/30)
2. कई तरह के सम्पुटों का प्रयोग मिलता है। यहाँ पर सामान्यरूप से प्रचलित सम्पुट का ही उल्लेख किया गया है।
3. कुछ लोग 'ॐ **जूँ सः**' को लघु मृत्युञ्जय मंत्र कहते हैं।

तीन लाख की मात्रा में किया गया जप कठिन बीमारी से भी बचाता देखा गया है।

सम्पुट महामृत्युञ्जय का सविधि जप निश्चित मृत्यु को भी टालता है। यह बात प्रसिद्ध और अनुभूत है, किन्तु महामृत्युञ्जय का जप केवल यज्ञोपवीतधारी वे द्विजाति कर सकते हैं जिनको शुद्ध उच्चारण का अभ्यास है। स्त्री इसके जप की अधिकारिणी नहीं है।

स्वयं न किया जा सकता हो तो इसका अनुष्ठान ब्राह्मण के द्वारा भी कराया जा सकता है। यदि ब्राह्मण नियमनिष्ठ हो, नित्य संध्या करता हो, नशा एवं तम्बाकू न खाता हो और ईमानदारी से पूरा जप करे तो ब्राह्मण के द्वारा अनुष्ठान से भी असाध्यतम रोग अच्छे हो जाते हैं-इसमें सन्देह का कारण नहीं है। महामृत्युञ्जय जप का पुरश्चरण 11 लाख का होता है। सुनिश्चित परिणाम की प्राप्ति के लिये एक पुरश्चरण पर्याप्त है। पुरश्चरण के अन्त में दशांश का हवन उसके दशांश का तर्पण, उसके दशांश का मार्जन और उसकी दशांश संख्या में ब्राह्मण-भोजन कराना अनुष्ठान का अङ्ग है।

महामृत्युञ्जय जप के अनेक चमत्कार देश में प्रसिद्ध हैं। कठिनाई यह है कि अब ठीक और पूरा अनुष्ठान करनेवाले नियमनिष्ठ उपयुक्त ब्राह्मणों का मिलना कठिन हो गया है। फिर भी संकटग्रस्त लोग इसका सहारा लेते हैं और कुछ लाभ भी प्राप्त करते हैं।

अनुष्ठान का प्रयोजन– श्रीमहामृत्युञ्जय का अनुष्ठान नीचे लिखे विभिन्न कार्यों के लिये होता है। (1) यदि जन्म, मास, गोचराष्टक-वर्ग और दशान्तर्दशा में ग्रहजन्य पीड़ा का योग हो, (2) बन्धु-बान्धव का वियोग हो रहा हो, (3) नगर, ग्राम या किसी क्षेत्र में महामारी आदि रोगों से लोगों की मृत्यु हो रही हो, (4) (राज्य)सत्ता या पदाधिकार जा रहा हो, (5) धन-हानि हो रही हो अथवा दारिद्र्य-शोक हो, (6) किसी ने शीघ्र मृत्यु होने को कह दिया हो, (7) कुण्डली-मेलापक में नाड़ी-दोष आता हो, (8) राजभय या अभियोग उपस्थित हो, (9) मनोधर्म का विपर्यय हो गया हो, (10) राष्ट्र-भंग हो रहा हो, (11) परस्पर घोर क्लेश हो रहा हो और (12) त्रिदोषजन्य दुर्निवार्य रोग हो, तो इन परिस्थितियों में यथाविधि महामृत्युञ्जय का जप करना या करवाना चाहिये।

कार्य के अनुसार मंत्र-जप संख्या – कामना के अनुसार महामृत्युञ्जय मंत्र-जप की संख्या इस प्रकार मानी गयी है-

(1) यदि किसी प्रकार की महामारी या अन्य प्रकार से देश में महा-उपद्रव या अशान्ति हो रही हो तो उनकी रोक-थाम के लिये एक करोड़ जप। (2) यदि किसी प्रकार का सामान्य रोग हो, अशुभ स्वप्न हुआ हो या अन्य कुछ भय हो तो सवा लाख जप। (3) यदि अपमृत्यु का भय हो अथवा कुछ संदिग्ध दुर्वार्ता सुनी हो तो दस हजार जप। (4) यदि यात्रा में भय हो तो एक हजार जप। और (5) अभीष्ट-सिद्धि, पुत्र-प्राप्ति, (राज्य)उच्च पद-प्राप्ति के लिये अथवा

यथेच्छ मान-सम्मान, धन-लाभादि के लिये सवा लक्ष का पुरश्चरण आवश्यक है।

अनुष्ठान की विधि – (1) कोई भी अनुष्ठान अगर किसी कार्य-सिद्धि के लिये किया जाय तो उसे शास्त्रोक्त विधि के अनुसार यथासमय करना चाहिये। आपत्ति से ग्रसित हो जाने पर मनमाने ढंग से कर्म करना अच्छा नहीं। (2) किसी कार्य-विशेष के कारण विवश होकर अचानक सहसा प्रयोग अनिवार्य हो तो शुभ बेला में इसका तात्कालिक प्रयोग भी किया जा सकता है। (3) यदि सब प्रकार की सानुकूलता हो और किसी महत्प्रयोजन की सिद्धि के लिये प्रयोग किया जाय तो मुहूर्तज्ञ ज्योतिषी से चन्द्र-तारादि-बल संयुक्त अच्छे मुहूर्त का दिन निश्चय करावें तथा शिवालय, देवालय अथवा अपने गृह में ही किसी पवित्र स्थान को झाड़-बुहार-धो- लीप-पोतकर, आसनभूमि का कूर्मशोधन* और दीप-स्थान* को शुद्ध करें। मुहूर्त से एक दिन पहले गायत्री जपादि द्वारा प्रायश्चित्त करें तथा मुहूर्त के दिन प्रातःकाल स्नान, संध्या तथा देवपूजा आदि नित्यकृत्य को पूरा कर अनुष्ठान के स्थान पर अपने आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन, प्राणायाम, शान्तिपाठ और देव-प्रणामादि करने के पश्चात् स्वस्थ-चित्त और एकाग्र मन से जप करें। कदाचित् पार्थिव-पूजापूर्वक जप करना हो तो विधि[1] के अनुसार मृत्तिका(मिट्टी) का शिवलिंग बनाकर उसकी पूजा करें एवं उस पार्थिव शिवलिङ्ग के सान्निध्य में संकल्पपूर्वक जप करें और यदि मूर्ति मौजूद हो तो उसके पूजनोपरान्त जप करें। (4) जप करनेवाला ब्राह्मण शुद्धचेता, प्रयोग-विधि का ज्ञाता, निर्वैर, निर्लोभी, उदार, दयालु, परोपकारी, नशारहित, अनुष्ठानी, देवताराधक और नियम-संयम से पूर्ण होना चाहिये। कदाचित् ब्राह्मणों की संख्या एक से अधिक हो तो वे भी उपर्युक्त गुण-संयुक्त विषम संख्या में(जैसे 1, 3, 5, 7, 9 या 11 ब्राह्मण) होने चाहिये। (5) प्रयोग यदि स्वयं करें तो कहना ही क्या, और यदि यजमान की ओर से दूसरों के द्वारा हो तो यजमान का चित्त भी शुद्ध, शान्त, सरल, असंशयी और कार्पण्य- रहित होना चाहिये। (6) प्रयोग की दैनिक जप-संख्या, स्थान, आसन, अशन (भोजन) और समय जप-पूर्णाहुति-कालतक निश्चित एवं समान रहने चाहिये। विषमता से विक्षेप सम्भव है। प्रयोग यदि पुरश्चरणात्मक हो तो समाप्ति के समय जप-संख्या का दशांश हवन, हवन-संख्या का दशांश-तर्पण, तर्पण-संख्या का दशांश मार्जन और मार्जन-संख्या का दशांश(या कार्यानुसार न्यूनाधिक) ब्राह्मण-भोजन कराना चाहिये। (7) यदि प्रयोग एक ही दिन का हो और हवनादि न हो सके तो उसके बदले में अधिक जप कर लेना चाहिये; किन्तु ब्राह्मण-भोजन अथवा भोजन के निमित्त सिद्धान्न या निष्क्रय द्रव्य देना अनिवार्य है। ऐसा करने से ही कार्य-सिद्धि होती है। वर्तमान समय में पश्चिम के प्रभाव से लोगों के विचार

* शिवालय एवं देवालय के अन्दर कूर्मशोधन की आवश्यकता नहीं है। कूर्मशोधन एवं दीपस्थान के बारे में जानकारी इसी पुस्तक में अन्यत्र दी गयी है।

1. पार्थिवपूजा की विधि इसी पुस्तक में अन्यत्र लिखी गयी है। कृपया इसके लिये वहाँ देखें।

बहुत बदल गये हैं। धर्म-कर्मानुष्ठानों में लोगों की श्रद्धा घट रही है और निरर्थक कामों में व्यर्थ अर्थ-व्यय करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है; फिर भी जिनकी अपने धर्म एवं शास्त्रों में कुछ श्रद्धा शेष हो, उन्हें अपने सर्वविधि कल्याण के लिये इस महामृत्युञ्जय-प्रयोग का आश्रय लेना चाहिये।

हवनविधि– (1) जप पूरा हो जाने के पश्चात् हवन-सामग्री के अनुसार शास्त्रोक्त प्रमाण से वेदी बनावें(अथवा विशेष परिस्थिति में ताँबे या मिट्टी का बना हुआ हवन-कुण्ड स्थापित करें), कुश-कण्डिका-विधि के अनुसार अग्नि-स्थापन कर शास्त्रोक्त विधि से यथापरिमित यथोचित द्रव्य का हवन करें। सामान्यतः हवन-सामग्री में तिल जितनी मात्रा में हो, उसकी आधी मात्रा में यव, यव का आधा चावल, चावल का आधा शक्कर और शक्कर(खाँड) का आधा घी रखने से उचित प्रमाणानुसार शाकल्य तैयार हो जाता है। इस शाकल्य में पञ्चमेवा, भोजपत्र और चन्दन का बुरादा भी छोड़ना चाहिये; लेकिन कामना विशेष के लिये हवन भी कई द्रव्यों का करना पड़ता है। (2) यदि सवा लक्ष का पुरश्चरण किया गया हो तो उसमें बिल्वफल, तिल, खीर, सरसों, दूध, दही, दूर्वा, बट, पलास और खैर की समिधा को मधुराप्लावित कर(घी, शक्कर एवं शहद में डुबोकर) यथाक्रम हवन करना चाहिये, (3) रोग-व्याधि के निवारण या शत्रु पर विजय-प्राप्ति के लिये, धन-सम्पत्ति एवं दीर्घायु-लाभ के लिये सुधावल्ली(गिलोय) की बेल के चार-चार अंगुल के टुकड़ों का हवन करें, (4) लक्ष्मी-प्राप्ति के लिये बिल्व-फल की समिधा से हवन करें। (5) ब्रह्मत्व-सिद्धि के लिये पलाश की समिधा का हवन करें। (6) धन-प्राप्ति के लिये बट की, (7) कान्तिवृद्धि के लिये खैर(खदिर) की, (8) अधर्म(पाप) नाशार्थ तिलों की, (9) शत्रु-नाशार्थ सरसों की, (10) यश एवं श्री-लाभार्थ खीर की, (11) पुत्रप्राप्ति एवं अपमृत्यु-निवारणार्थ दही की, (12) रोग-क्षय के लिये तीन-तीन दूर्वाओं की, (13) प्रबल ज्वर-नाश के लिये अपामार्ग (औंधाकोरा या चिचिड़ा) की अथवा अग्नि से पकाई खीर की, (14) वशीकरण के लिये गाय के दूध व दूर्वाङ्कुरों की और (15) सर्व प्रकार के रोगों से मुक्ति के लिये काश्मरी(गांधारी) की तीन-तीन समिधा तथा दूध और अन्न की आहुतियों से हवन करें। हवन की प्रत्येक आहुति में 'स्वाहा' शब्द कहें और हवन के बाद एक पात्र में जल व दूध मिलाकर, उसमें से थोड़ा सा अञ्जली या अर्घे में लेकर "महामृत्युञ्जयं तर्पयामि" अथवा "अमुकं तर्पयामि" यह उच्चारण करता हुआ तर्पण करें और दुर्वांकुरों से जल ले-लेकर स्वयं प्रयोग हो तो अपने शरीर पर और यजमान की ओर से किया हो तो यजमान के शरीर पर दशांश संख्यामित मार्जन करें।

संकल्प-विधि– विद्वानों के लिये तो कोई विधि-निर्देश सर्वथा अनावश्यक है; किन्तु सर्व-साधारण के लिये लिखना पड़ता है। सब कामों की संकल्प से ही सिद्धि होती है और साधारण लोग बहुधा संकल्प में विकल्प कर देते हैं। अतः स्मरण रखना चाहिये कि (1) किसी

भी कामना के लिये यजमान की ओर से अनुष्ठान करना हो तो कार्यारम्भ के पहले देश-काल का कीर्तन करते हुए कामना का सम्बोधन करके यजमान के हाथ से संकल्प करायें, फिर अनुष्ठानकर्त्ता को प्रति बार स्वयं संकल्प करना चाहिये। अपने लिये अनुष्ठान करनेवाले को प्रतिदिन स्वयं संकल्प करना चाहिये। (2) संकल्प की कल्पना में यह ध्यान रखना चाहिये कि किसकी ओर से, किसके द्वारा, किस काम के लिये, कितनी मात्रा में किया जाना है। इन बातों का व्याकरण के अनुसार शुद्ध सम्बोधन कर संकल्प करना-कराना चाहिये। उदाहरणार्थ यहाँ दो-चार संकल्प दिये जा रहे हैं। (3) ॐ **तत्सदद्येत्यादि......अमुक गोत्रोऽमुकशर्मा (वर्मा या गुप्त) ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणतन्त्रोक्तफलावाप्तयेमम जन्म-वर्ष-मास-दिन गोचराष्टक-वर्ग-दशान्तर्दशादिषु अनष्टिफलकारका ग्रहास्तेषां सानुकूल्यार्थंसकलाधिव्याधिझटिति प्रशमनपूर्वकदीर्घायुष्यबलपुष्टिनैरुज्यादिसकलाभीष्टसिद्ध्यर्थे श्रीमहामृत्युञ्जयप्रीत्यर्थे अमुक(शत सहस्रायुत लक्षादि) संख्यया श्रीमहामृत्युञ्जयजपमहं करिष्ये(वा विप्र द्वारा कारयिष्ये)। (4) अथवा "विषूचिकादि जनमारोपसर्गशान्त्यर्थं" वा। (5) "वृष्टिकामार्थं"वा (6)"अमुकाभियोगनिवृत्त्यर्थे" वा (7)"अमुक-दुःस्वप्ननिरसनार्थं" वा (8) "अमुकदिग्यात्रानिर्विघ्नतापूर्वकसिद्ध्यार्थं वा (9) प्रतिसन्मुखशुक्रदोषदूरीकरणार्थं" वा (10)"काकमैथुनदर्शनादिसूचितसर्वारिष्टनिवृत्त्यर्थं वा (11) पल्लीपतन-सरटारोहेणमुकदुष्टाङ्गस्फुरणजनिताऽशुभफलविनाशार्थं" वा (12) "दीर्घायुष्य-पुत्रप्राप्त्यर्थं" वा (13) "यथेच्छधनलाभार्थं" वा (14) "अमुकोच्चपद प्राप्त्यर्थं" अथवा (15) "अमुककामनासिद्ध्यर्थं" अमुकसंख्यापरिमितश्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये (वा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये)।** इस प्रकार जैसा आवश्यक हो वही संकल्प करना चाहिये।

श्रीमहामृत्युञ्जयजपविधि- जप करनेवाला नित्यक्रिया के बाद भस्म, त्रिपुण्ड्र एवं रुद्राक्ष धारण कर कृष्णाजिन, व्याघ्रचर्म, कुशा (दर्भ) अथवा किसी यथोचित आसन पर पूर्व या उत्तर मुख बैठकर सामने शिवलिंग या प्रतिमा स्थापित कर ले। प्रथम आचमन, प्राणायाम, शरीर-शुद्धि एवं आसन-शुद्धि करे। तत्पश्चात् ध्यानपूर्वक शांतिपाठ करके गुरु, गणेश एवं इष्टदेव का पूजन एवं ध्यान करे तथा पूर्वोक्त 'संकल्पविधि' के अनुसार प्रतिज्ञा-संकल्प[1] करे और तब भूतशुद्धि, स्व की प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मात्रिकान्यास, बहिर्मात्रिकान्यास, श्रीकण्ठादिमातृकाकलान्यास आदि जप-संबंधी आवश्यक क्रियाओं को (जिनका उल्लेख अन्य अध्यायों में हो चुका है) यथासंभव करे। तत्पश्चात् विनियोग करे।

विनियोग मन्त्र- (हाथ में जल लेकर यह मन्त्र पढ़ें) ॐ **हौं** ॐ **जूँ सः भूर्भुवः स्वः**

1. हाथ में जल, पुष्प और अक्षत लेकर संकल्पवाक्य बोलना चाहिये।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। ऊर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूँ सः हौं ॐ। ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठा ऋषयः। पंक्तिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि। सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता। ह्रीं शक्तिः। श्रीं बीजं। महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। तत्पश्चात् हाथ का जल भूमि पर छोड़ दें। विनियोग के पश्चात् ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, पदन्यास एवं वर्णन्यास करना चाहिये।

ऋष्यादिन्यास– ॐ **वामदेवकहोलवसिष्ठऋषिभ्यो नमः, मूर्ध्नि**(यह मन्त्र बोलकर शिर–स्पर्श करें)। ॐ **पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः वक्त्रे**(मुख–स्पर्श करें)। ॐ **सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रदेवतायै नमः हृदि** (हृदय का स्पर्श करें)। **ह्रीं शक्तये नमः लिंगे** (लिंग–स्पर्श करें)। ॐ **श्रीं बीजाय नमः पादयोः**(चरणस्पर्श करें)।

करन्यास– ॐ **हौं** ॐ **जूँ सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं** ॐ **नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः**(तर्जनी से अंगूठों का स्पर्श करें), ॐ **हौं** ॐ **जूँ सः भूर्भुवः स्वः यजामहे** ॐ **नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय तर्जनीभ्यां नमः**(अंगूठों से तर्जनी का स्पर्श करें), ॐ **हौं** ॐ **जूँ सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं** ॐ **नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः**(अंगूठों से मध्यमा अंगुली का स्पर्श करें), ॐ **हौं** ॐ **जूँ सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बन्धनात्** ॐ **नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं**[1] **अनामिकाभ्यां नमः**(अंगूठों से अनामिका अंगुली का स्पर्श करें), ॐ **हौं** ॐ **जूँ सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय** ॐ **नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः**(अंगूठों से कनिष्ठा अंगुली का स्पर्श करें) तथा ॐ **हौं** ॐ **जूँ सः भूर्भुवः स्वः मामृतात्** ॐ **नमो भगवते रुद्राय** ॐ **अग्नित्रयाय ज्वलज्वल मां रक्षरक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**(यह मन्त्रोच्चारण करते हुए दोनों हथेलियों को क्रमशः सामने से तथा उन्हें उलट कर मिलायें)।

अंगन्यास– उपर्युक्त कर–न्यास के मन्त्रों द्वारा ही अङ्ग–न्यास किया जाता है। अन्तर केवल इतना है कि प्रथम मंत्र में '**अंगुष्ठाभ्यां नमः**' के स्थान पर '**हृदयाय नमः**' कहकर हृदय का स्पर्श करना चाहिये। इसी भांति अग्रिम मंत्रों में '**तर्जनीभ्यां नमः**' के स्थान पर '**शिरसे स्वाहा**', **मध्यमाभ्यां नमः**' के स्थान पर '**शिखायै वषट्**', **अनामिकाभ्यां नमः**' के स्थान पर '**कवचाय हुम्**', '**कनिष्ठिकाभ्यां नमः**' के स्थान पर '**नेत्रत्रयाय वौषट्**' और '**करतलकर– पृष्ठाभ्यां नमः**' के स्थान पर '**अस्त्राय फट्**' कहकर दाहिने हाथ को बायें ओर से सिर के ऊपर से घुमाकर बायें हाथ की हथेली पर तर्जनी एवं मध्यमा दो अंगुलियों से तीन बार ताली बजायें।

अक्षर अथवा वर्णन्यास–

ॐ **हौं** ॐ **जूँ सः भूर्भुवः स्वः त्र्यं नमः पूर्वमुखे।**

ॐ **हौं** ॐ **जूँ सः भूर्भुवः स्वः बं नमः पश्चिम मुखे।**

ॐ **हौं** ॐ **जूँ सः भूर्भुवः स्वः कं नमः दक्षिण मुखे।**

---

1. कहीं–कहीं पर '**ह्रीं**' की जगह '**ह्रौं**' पाठ मिलता है।

ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः यं नमः उत्तर मुखे।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः जां नमः उरसि।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मं नमः कण्ठे।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः हें नमः मुखे।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः सुं नमः नाभौ।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः गं नमः हृदि।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः धिं नमः पृष्ठे।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः पुं नमः कुक्षौ।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः ष्टिं नमः लिङ्गे।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः वं नमः गुदे।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः र्धं[1] नमः दक्षिणोरुमूले।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः नं नमः वामोरुमूले।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः उं नमः दक्षिणोरुमध्ये।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः र्वां[2] नमः वामोरुमध्ये।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः रुं नमः दक्षिणजानुनि।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः कं नमः वामजानुनि।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मिं नमः दक्षिणजानुवृत्ते
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः वं नमः वामजानुवृत्ते
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः बं नमः दक्षिणस्तने।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः धं नमः वामस्तने।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः नां नमः दक्षिणपार्श्वे।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मृं नमः बामपार्श्वे।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः त्यों नमः दक्षिणपादे।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मुं नमः वामपादे।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः क्षीं नमः दक्षिणकरे।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः यं नमः वामकरे।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मां नमः दक्षिणनासायाम्।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मृं नमः वामनासायाम्।
ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः तातं[3] नमः मूर्ध्नि।

1. मन्त्रमहोदधि: आदि में 'र्धं' की जगह 'धं' पाठ मिलता है।
2. मन्त्रमहोदधि: आदि में 'र्वां' की जगह 'वं' पाठ मिलता है।
3. मन्त्रमहोदधि: आदि में 'तातं' की जगह 'तां' पाठ मिलता है।

पदन्यास– ॐ **त्र्यम्बकं शिरसि**(शिर का स्पर्श करें)। ॐ **यजामहे भ्रुवोः**(दोनों भौंहों का स्पर्श करें)। ॐ **सुगन्धिं नेत्रयोः**(नेत्रों का स्पर्श करें)। ॐ **पुष्टिवर्धनं मुखे**(मुख का स्पर्श करें)। ॐ **उर्वारुकं गण्डयोः** (गालों का स्पर्श करें)। ॐ **इव हृदये**(हृदय का स्पर्श करें)। ॐ **बन्ध– नात् जठरे**(पेट का स्पर्श करें)। ॐ **मृत्योर्लिंगे** (लिङ्ग का स्पर्श करें)। ॐ **मुक्षीय उर्वोः**(घुटनों का स्पर्श करें)। ॐ **मा जान्वोः**(जंघों का स्पर्श करें)। ॐ **अमृतात् पादयोः**(पैरों का स्पर्श करें)। **मूलेन व्यापकं कृत्वा ध्यानं कुर्यात्** (तत्पश्चात् सम्पूर्ण मूलमन्त्र से व्यापकन्यास कर एकाग्रचित्त होकर निम्न मन्त्र से ध्यान करें)।

ध्यानमन्त्र – हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौकरौ। अक्षस्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं त्र्यक्षं च मृत्युञ्जयम्॥* (ध्यान का स्वरूप– भगवान् मृत्युञ्जय के आठ हाथ हैं। वे अपने ऊपर के दोनों करकमलों से दो घड़ों को उठाकर उसके नीचे के दो हाथों से जल को अपने सिर पर उड़ेल रहे हैं। सबसे नीचे के दो हाथों में भी दो घड़े लेकर उन्हें अपनी गोद में रखलिया है। शेष दो हाथों में वे रुद्राक्ष की माला तथा मृग धारण किये हुए हैं। वे कमल के आसन पर बैठे हैं और उनके शीर्षस्थ चन्द्र से निरन्तर अमृतवृष्टि के कारण उनका शरीर भींगा हुआ है। उनके तीन नेत्र हैं। तथा उन्होंने मृत्यु को सर्वथा जीत लिया है। उनके वामाङ्गभाग में गिरिराजनन्दिनी भगवती उमा विराजमान हैं– ऐसे भगवान् मृत्युञ्जय का ध्यान करता हूँ।)

इस प्रकार ध्यान करके भगवान् शिव की पंचोपचार, षोडशोपचार अथवा मानसोपचार से पूजा करनी चाहिये। मानसोपचार पूजा की संक्षिप्त विधि इस प्रकार है।

मानसोपचारपूजन – भगवान् के उपर्युक्त स्वरूप का चिन्तन करते हुए आगे लिखे प्रत्येक मन्त्र के उच्चारण के साथ क्रमशः मनःकल्पित गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य तथा पुनः मन्त्रपुष्प को ध्यान द्वारा भगवान् को अर्पित करें; इसे मानसोपचार–पूजन कहते हैं – ॐ **लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि।** ॐ **हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।** ॐ **यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि।** ॐ **रं तैजसात्मकं दीपं दर्शयामि।** ॐ **वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि।** ॐ **सौं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि॥** (कहीं–कहीं पर पहले तीन मन्त्रों में ‘समर्पयामि’ की जगह ‘परिकल्पयामि’ आता है।)

मन्त्रजप– श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्र–जप के लिये जप–माला शुद्ध रुद्राक्ष की तथा संस्कारित[1] होनी चाहिये। इसके अभाव में उंगलियों पर ही जप करना चाहिये। मूल मन्त्र यह है– “ॐ **हौं**

* मन्त्रमहोदधिः में जो ध्यान का मन्त्र दिया गया है उसमें शब्दों का मामूली अन्तर पाया जाता है, यद्यपि ये अन्तर अर्थ को प्रभावित नहीं करते।

1. संस्कारित माला का प्रयोग जप के लिये किस प्रकार किया जाता है इसका उल्लेख पंचाक्षरमन्त्र के जप के प्रसंग में आ चुका है। उसी भाँति माला का यहाँ भी प्रयोग करें।

ॐ जूँ सः, भूर्भुवः स्वः, त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिवबन्ध-नान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्, भूर्भुवः स्वरों जूँ सः हौं ॐ ।।" यह सम्पुटयुक्त मन्त्र है। इसका प्रायः सवा लाख जप सर्वार्थ-साधक माना गया है। जप-संख्या पूरा कर लेने के पश्चात् पूर्वोक्त रीति से पुनः कर-न्यास एवं अङ्ग-न्यास करें। जप दोपहर पर्यन्त ही करें। षडंग न्यासोपरान्त महामृत्युञ्जय कवच का पाठ करें। कवच इस प्रकार है।

मृत्युञ्जय कवच

भैरव उवाच-

शृणुष्व परमेशानि कवचं मन्मुखोदितम्।
महामृत्युंजयस्यास्य न देयं परमाद्भुतम्।।
यद्धृत्वा यत्पठित्वा च यच्छ्त्वा कवचोत्तमम्।
त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा सुखितोऽस्मि महेश्वरि।।
तदेव वर्णयिष्यामि तव प्रीत्या वरानने।
तथापि परमं तत्त्वं न दातव्यं दुरात्मने।।

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजयकवचस्य श्रीभैरव ऋषिः। गायत्रीछन्दः। श्रीमृत्युंजय रुद्रो देवता। ॐ बीजम्। जूं शक्तिः। सः कीलकम्। हौमिति तत्त्वम्। श्रीचतुर्वर्गफलसाधनाय* पाठे विनियोगः।

चन्द्रमण्डलमध्यस्थे रुद्रमाले विचित्रिते।
तत्रस्थं चिन्तयेत्साध्यं मृत्युं प्राप्तोऽपि जीवति।।
ॐ जूं सः हौं शिरः पातु देवो मृत्युंजयो मम।
श्रीं शिवो वै ललाटं च ॐ हौं भ्रुवौ सदाशिवः।।
नीलकण्ठोऽवतान्नेत्रे कपर्दी मेऽवताच्छ्रुती।
त्रिलोचनोऽवताद्गण्डौ नासां मे त्रिपुरान्तकः।।
मुखं पीयूषघटभृदोष्ठौ मे कृत्तिकाम्बरः।
हनुं मे हाटकेशानो मुखं बटुकभैरवः।।
कन्धरां कालमथनो गलं गणप्रियोऽवतु।
स्कन्धौ स्कन्दपिता पातु हस्तौ मे गिरिशोऽवतु।।
नखान्मे गिरिजानाथः पायादङ्गुलिसंयुतान्।
स्तनौ तारापतिः पातु वक्षः पशुपतिर्मम।।
कुक्षिं कुबेरवरदः पार्श्वौ मे मारशासनः।

* संकल्प-वाक्य में जिस फल की प्राप्ति का उल्लेख किया गया हो, उसका ही यहाँ उल्लेख करें।

शर्वः पातु तथा नाभिं शूली पृष्ठं ममाऽवतु।।
शिश्नं मे शंकरः पातु गुह्यं गुह्यकवल्लभः।
कटिं कालान्तकः पायादूरू मेऽन्धकघातकः।।
जागरूकोऽवताज्जानु जङ्घे मे कालभैरवः।
गुल्फौ पायाज्जटाधारी पादौ मृत्युञ्जयोऽवतु।।
पादादिमूर्द्धपर्यन्तं सद्योजातो ममावतु।
रक्षाहीनं नामहीनं वपुः पात्वमृतेश्वरः।।
पूर्वे बलविकरणो दक्षिणे कालशासनः।
पश्चिमे पार्वतीनाथ उत्तरे मां मनोन्मनः।।
ऐशान्यामीश्वरः पायादाग्नेय्यामग्निलोचनः।
नैर्ऋत्यां शम्भुरव्यान्मां वायव्यां वायुवाहनः।।
ऊर्ध्वे बलप्रमथनः पाताले परमेश्वरः।
दशदिक्षु सदा पातु महामृत्युञ्जयश्च माम्।।
रणे राजकुले द्यूते विषमे प्राणसंशये।
पायादों जूं महारुद्रो देवदेवो दशाक्षरः।।
प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवोऽवतु।
सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां नित्यचेतनः।।
अर्द्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोदयः।
सर्वदा सर्वतः पातु ॐ जूं सः हौं मृत्युञ्जयः।।
इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।
सर्वमन्त्रमयं गुह्यं सर्वतन्त्रेषु गोपितम्।।

माहात्म्यम् :

पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देवदेवाधिदैवतम्।
य इदं च पठेन्मन्त्रं कवचं वाचयेत्ततः।।
तस्य हस्ते महादेवि त्र्यम्बकस्याष्टसिद्धयः।
रणे धृत्वाचरद्युद्धं हत्वा शत्रूञ्जयं लभेत्।।
जयं कृत्वा गृहं देवि स प्राप्स्यति सुखं पुनः।
महाभये महारोगे महामारीभये तथा।।
दुर्भिक्षे शत्रुसंहारे पठेत्कवचमादरात्।
सर्वं तत्प्रशमं याति मृत्युञ्जयप्रसादतः।।
धनं पुत्रान्सुखं लक्ष्मीमारोग्यं सर्वसम्पदः।
प्राप्नोति साधकः सद्यो देवि सत्यं न संशयः।।

इतीदं कवचं पुण्यं महामृत्युञ्जयस्य तु।
गोप्यं सिद्धिप्रदं गुह्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्।।

उपर्युक्त कवच पढ़ने के बाद निम्नलिखित प्रार्थना करें तथा जप को निम्न तरीके से अर्पण करें।

प्रार्थना एवं अर्पण– फूल लेकर हाथ जोड़ें और इस मंत्र से प्रार्थना करें **"गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर।। मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः।।"** (फूल भूमि पर छोड़ दें; फिर हाथ में जल लेकर इस मन्त्र को बोलते हुए अर्पण करें) **"ॐ अनेन महामृत्युञ्जयजपारव्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयः प्रीयतामिति जपमीश्वरार्पणं कुर्यात्।।"** हाथ का जल भूमि पर छोड़ दें।

सवालाख जप के द्वारा पुरश्चरण करके जप का दशांश निम्नलिखित 10 द्रव्यों द्वारा हवन करना चाहिये।

दशद्रव्यैः प्रजुहुयात्तानि बिल्वफलं तिलाः।
पायसं सर्प्पिषादुग्धं दधि दूर्वां च सप्तमी।।
वटात् पलाशात्खदिरात्समिधोमधुराप्लुताः।।

(मन्त्रमहोदधिः 16/21-22 तथा अनुष्ठानप्रकाशः पृ. 136)

अर्थात्-बेल का फल, तिल, घी, खीर, दूध, दही, दूब तथा वट, पलाश एवं खैर की मधु-लिप्त (घी, शहद एवं शक्करलिप्त) समिधा द्वारा हवन करना चाहिये। होमकार्य के अन्त में जल में मृत्युंजय देव की पूजा कर होम के दशांश तर्पण एवं उसके दशांश मार्जन करें। महामृत्युञ्जय मन्त्र को पढ़कर '**ॐ मृत्युंजयं तर्पयामि नमः**' बोलते हुए दूध मिले हुए जल से तर्पण करें। इसी प्रकार मूल मन्त्र को पढ़कर '**ॐ मृत्युंजयं अभिषिञ्चामि**' बोलते हुए मार्जन करें। मार्जन के पश्चात् 100 ब्राह्मण को भोजन करायें। कहीं-कहीं पर हवन के लिये शतक्षरा गायत्री का प्रयोग किया जाता है।

शताक्षरा गायत्री मन्त्र इस प्रकार है-

"ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वाहा।"

(यह लेख गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित 'शिवोपासनांक', वेंकटेश्वर प्रेस द्वारा संवत् 2008 में प्रकाशित 'अनुष्ठानप्रकाशः', शुकदेव चतुर्वेदी द्वारा संपादित एवं चौरवम्बा संस्कृत सीरिज आफ़िस वाराणसी द्वारा 1981 में प्रकाशित मन्त्रमहोदधिः तथा सत्यवीर शास्त्री द्वारा लिखित एवं मनोज पब्लिकेशन द्वारा 1999 में प्रकाशित 'शिवउपासना' पर आधारित है।)

✪✪✪✪✪✪✪